मनुष्य शरीर दूर्लभ है ।
भगवत प्राप्ति का साधन है
लेकिन स्थिर नहीं है ।
अस्तु भगवत भजन शीघ्र ही
प्रारम्भ कर देना चाहिए ।

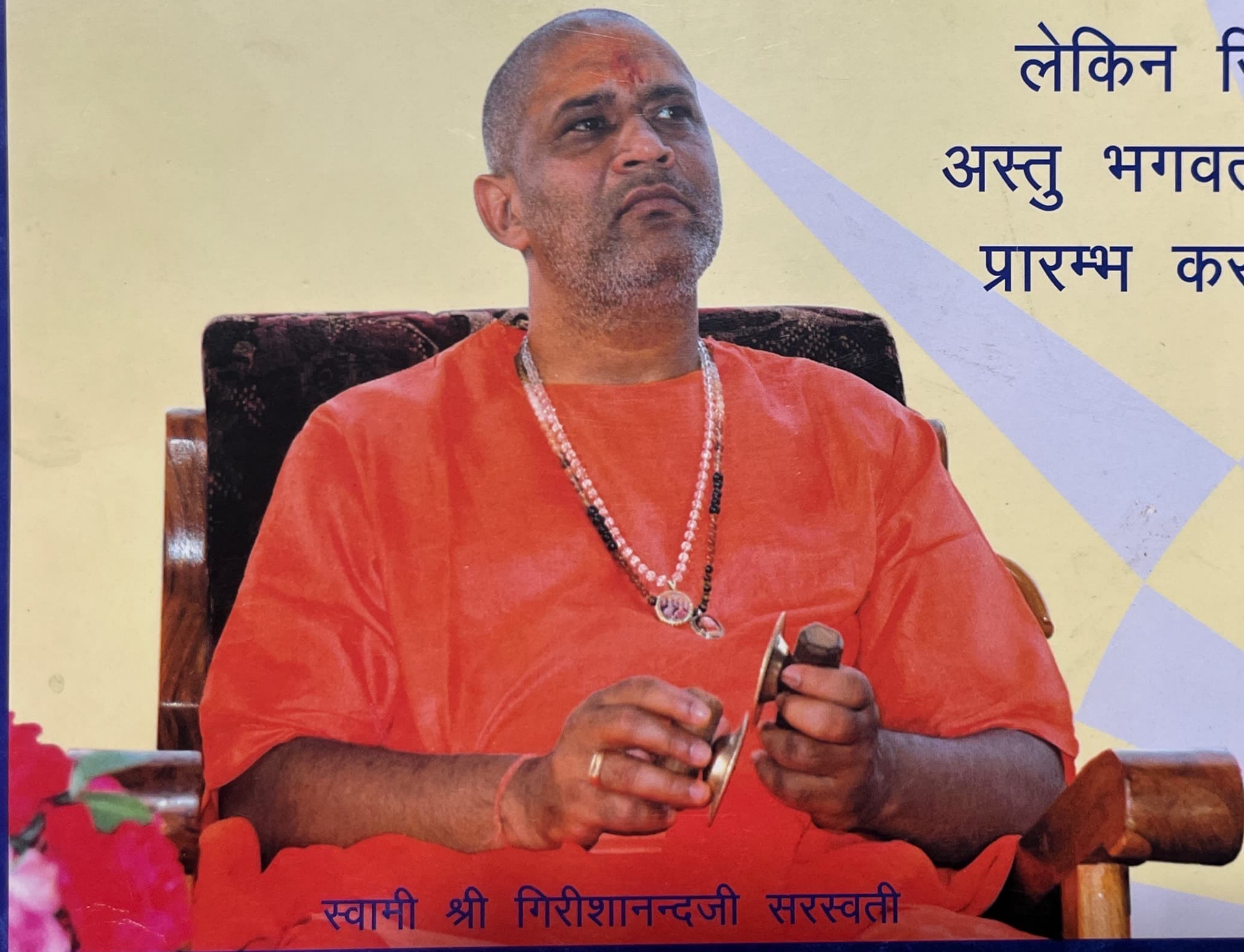

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

1

जीव का सच्चा सखा ईश्वर है ।

इसलिए प्राथमिकता

ईश्वर की होनी चाहिए ।

2

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

जीव की कभी मौत नहीं होती।
इसलिए अच्छे कार्य निर्भीक
होकर करना चाहिए।

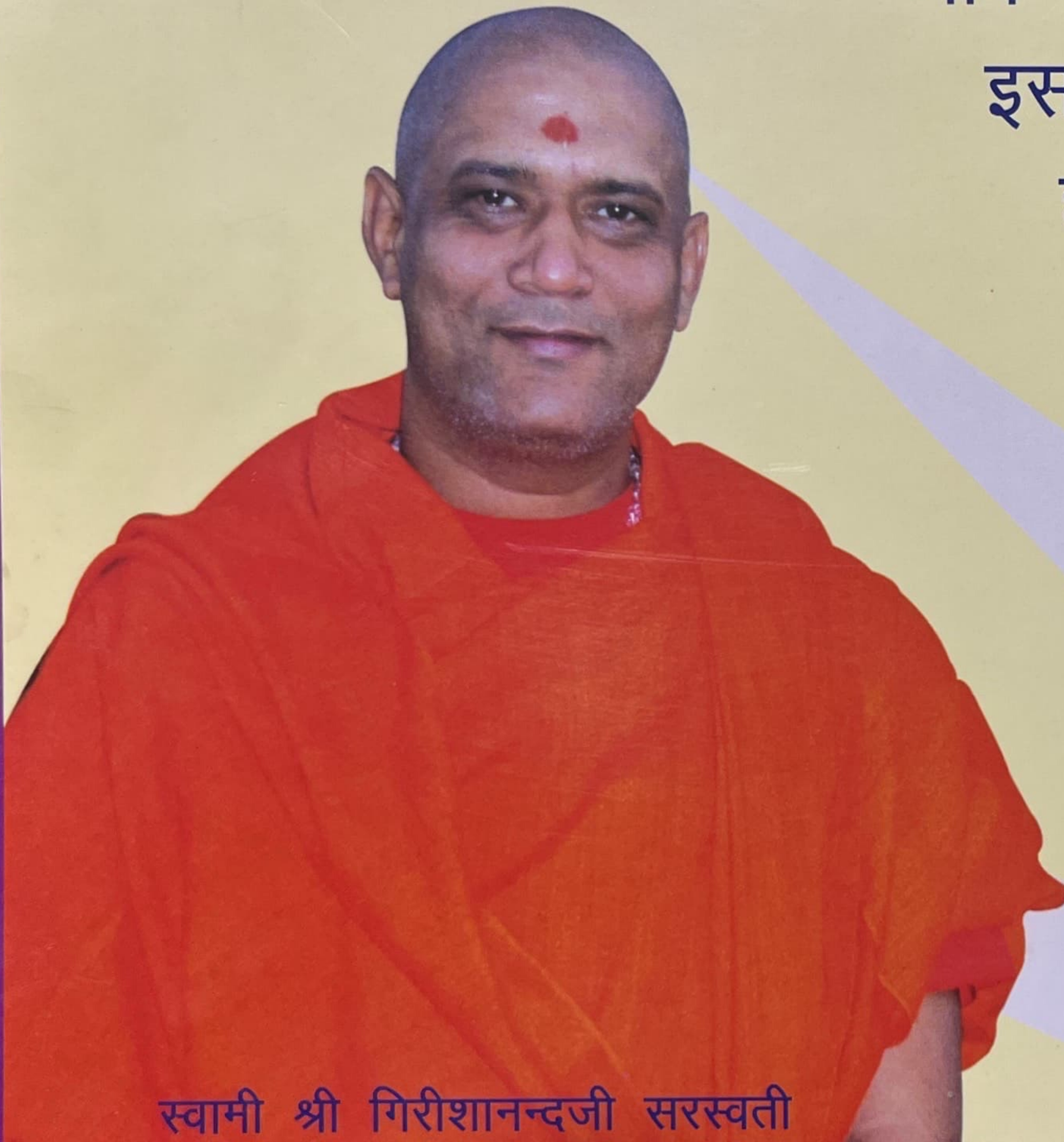

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

3

जैसे बिना इच्छा के
सांसारिक दुःख प्राप्त हो जाते हैं,
वैसे ही सुख भी प्राप्त होते हैं ।

4

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

वृद्धावस्था एवं रुग्णता के पूर्व ही
ईश्वर भजन कर लेना चाहिए ।

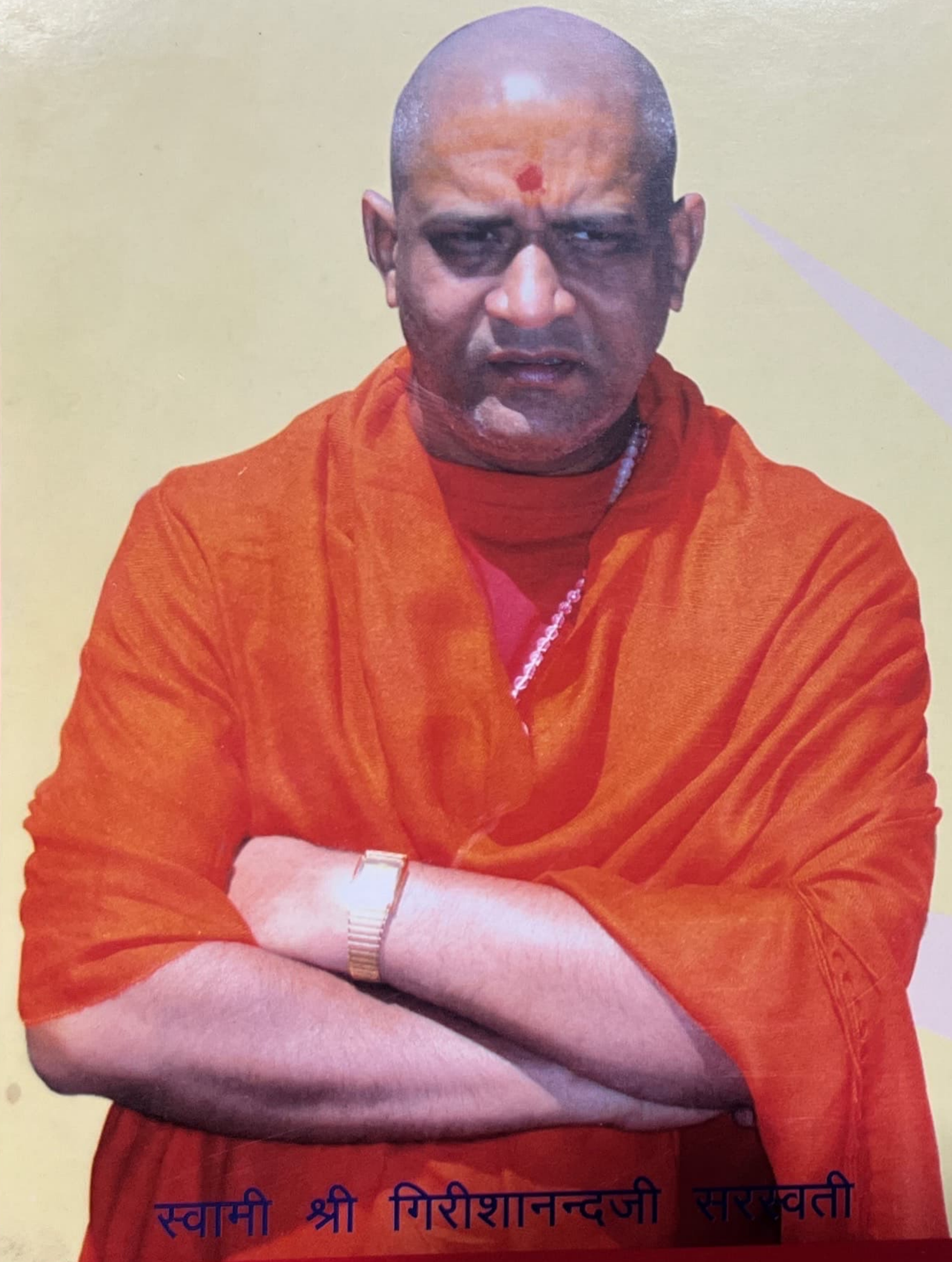

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

5

जीने का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति है,
इसको प्रयास पूर्वक करना चाहिए ।

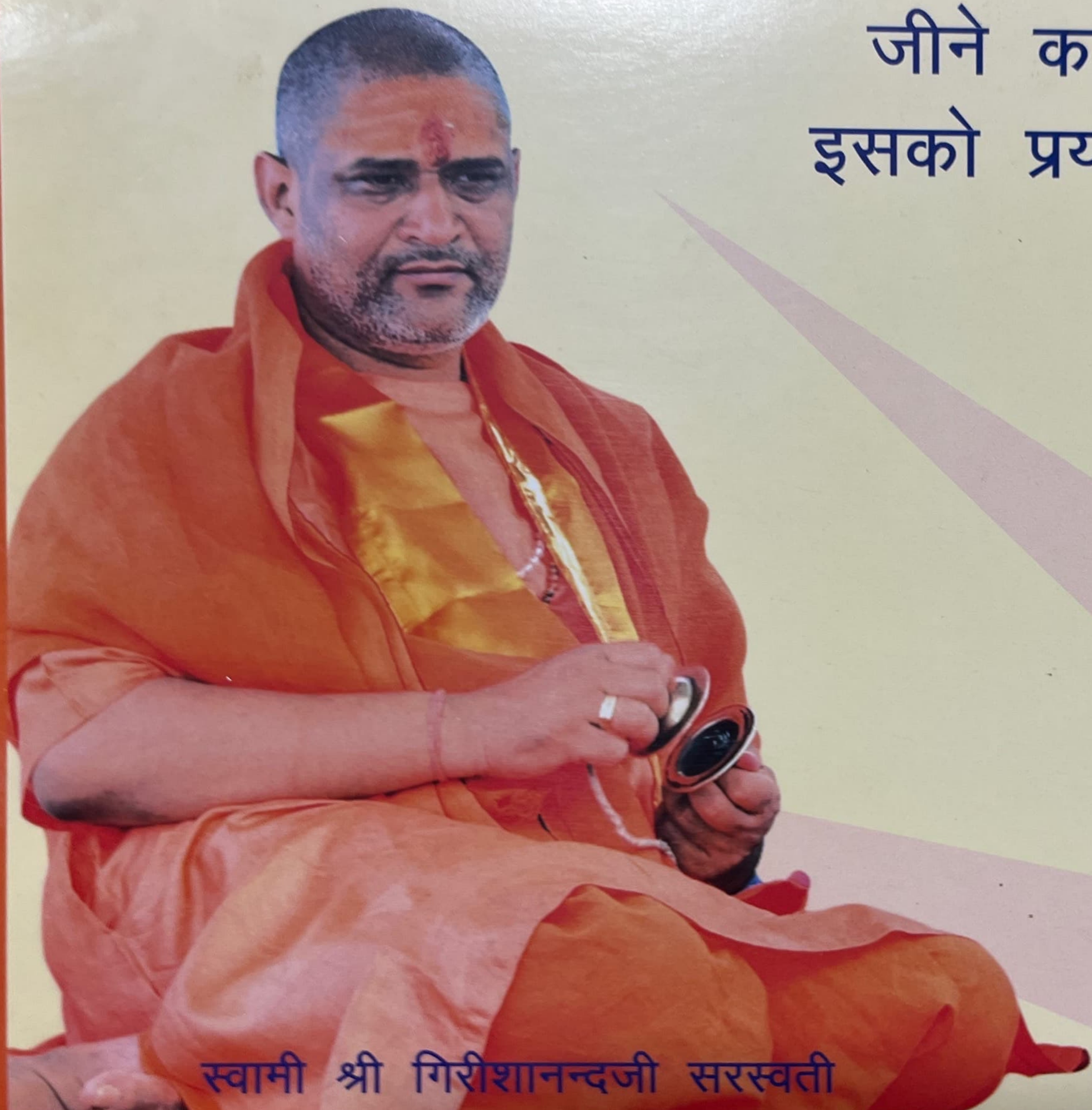

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

6

सम्पत्ति का उपयोग
धर्म में होना चाहिए,
भोग में नहीं ।

7

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

धर्म के द्वारा ईश्वर प्राप्ति करना चाहिए,
सुख सुविधाएँ नहीं ।

८

स्वामी श्री गिरिशानन्दजी सरस्वती

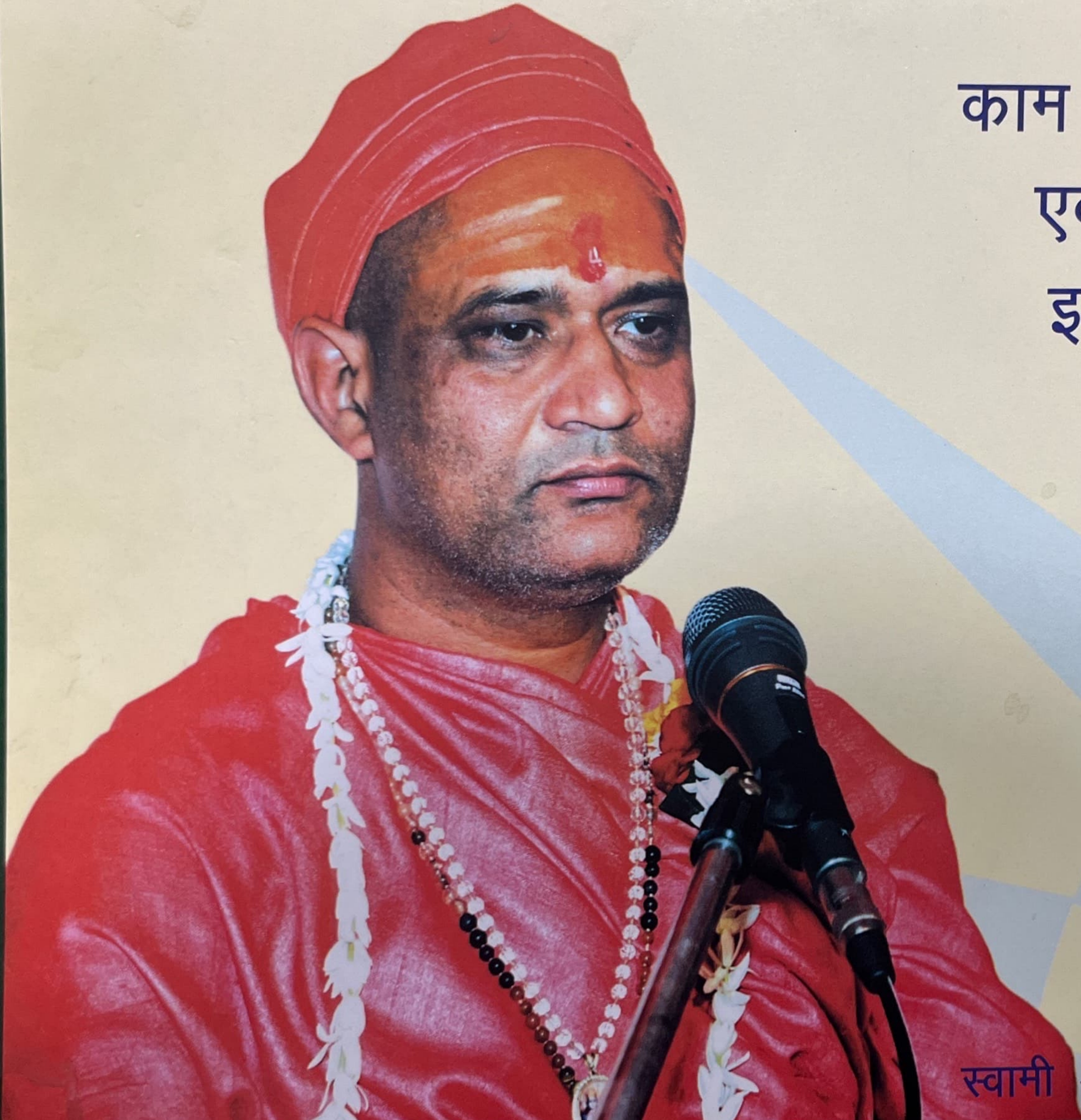

काम का उद्देश्य व्यवस्थित
एवं स्वस्थ जीवन है,
इन्द्रिय तुष्टि नहीं।

9

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

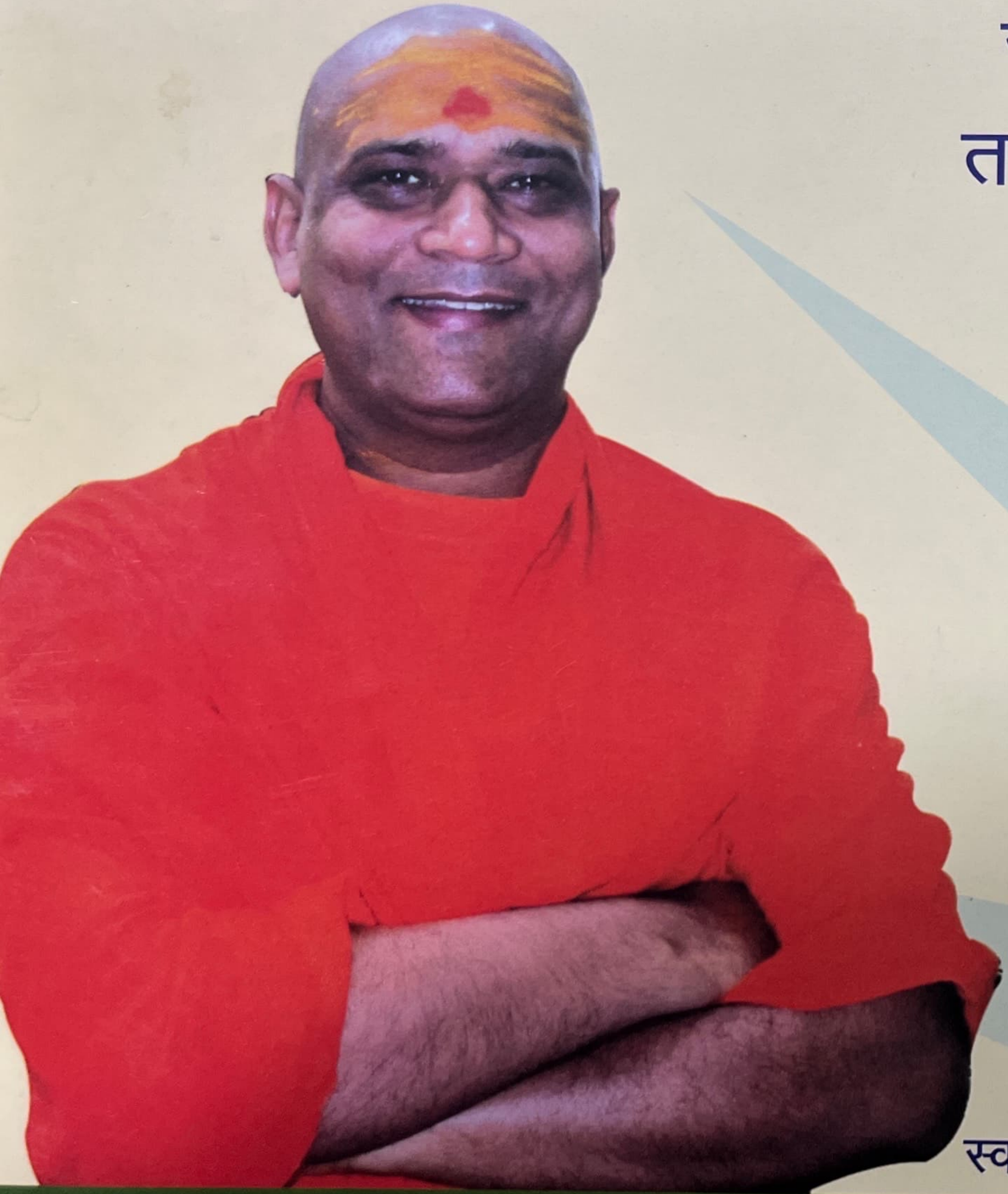

जब तक शरीर का प्रारब्ध है,
तब तक मृत्यु हो नहीं सकती ।
प्रारब्ध पूरा होने पर
कोई बचा नहीं सकता ।

10

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

ईश्वर प्राप्ति सरल है,
क्योंकि वह आत्मा के रुपमें
नित्य विद्यमान है ।

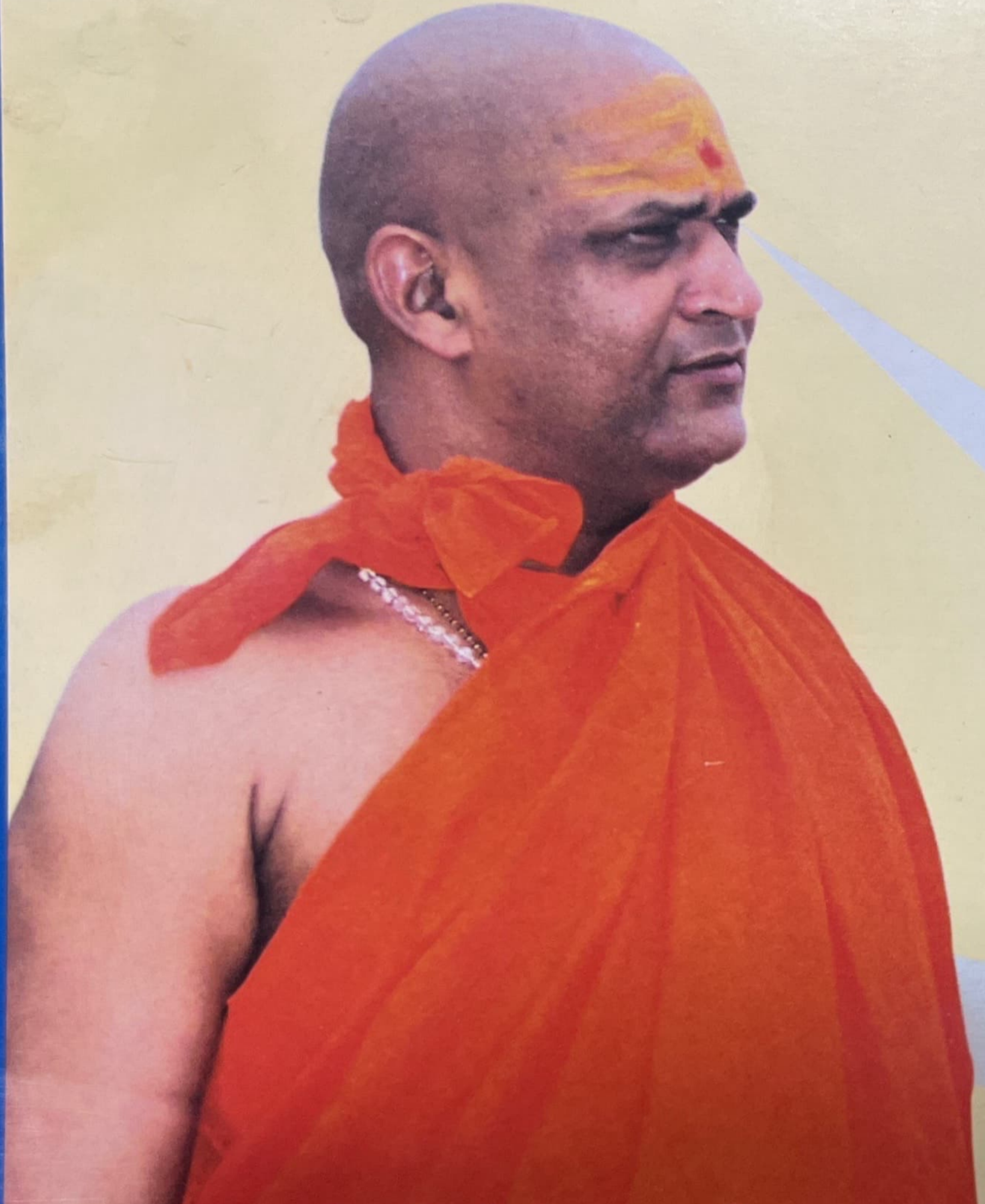

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

11

संसार की प्राप्ति स्थाई नहीं है,
क्योंकि यह विनाशशील है ।

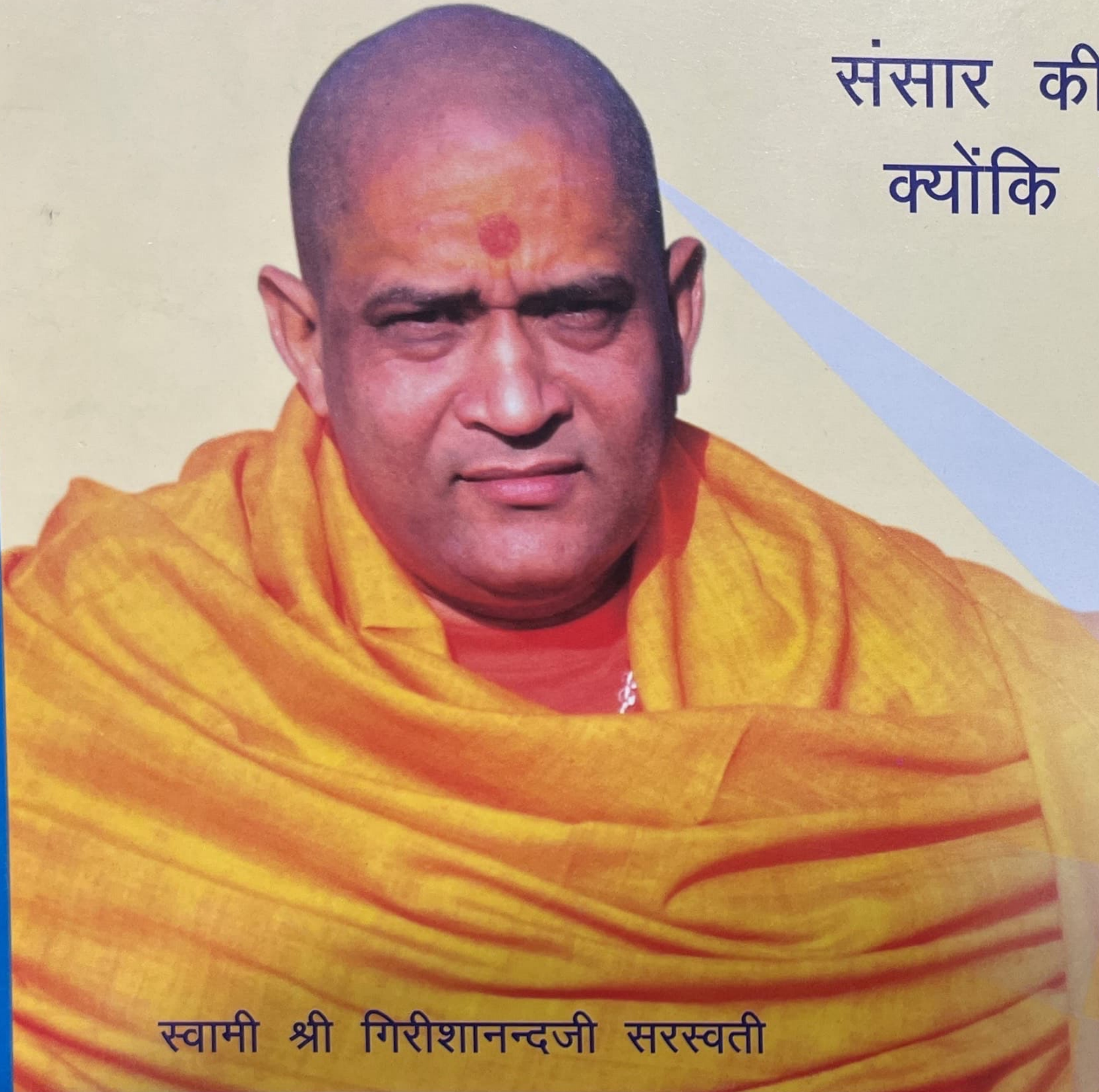

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

12

सुख दुःख मन का धर्म है,
वस्तु, व्यक्ति एवं
परिस्थिति केवल निमित्त मात्र है ।

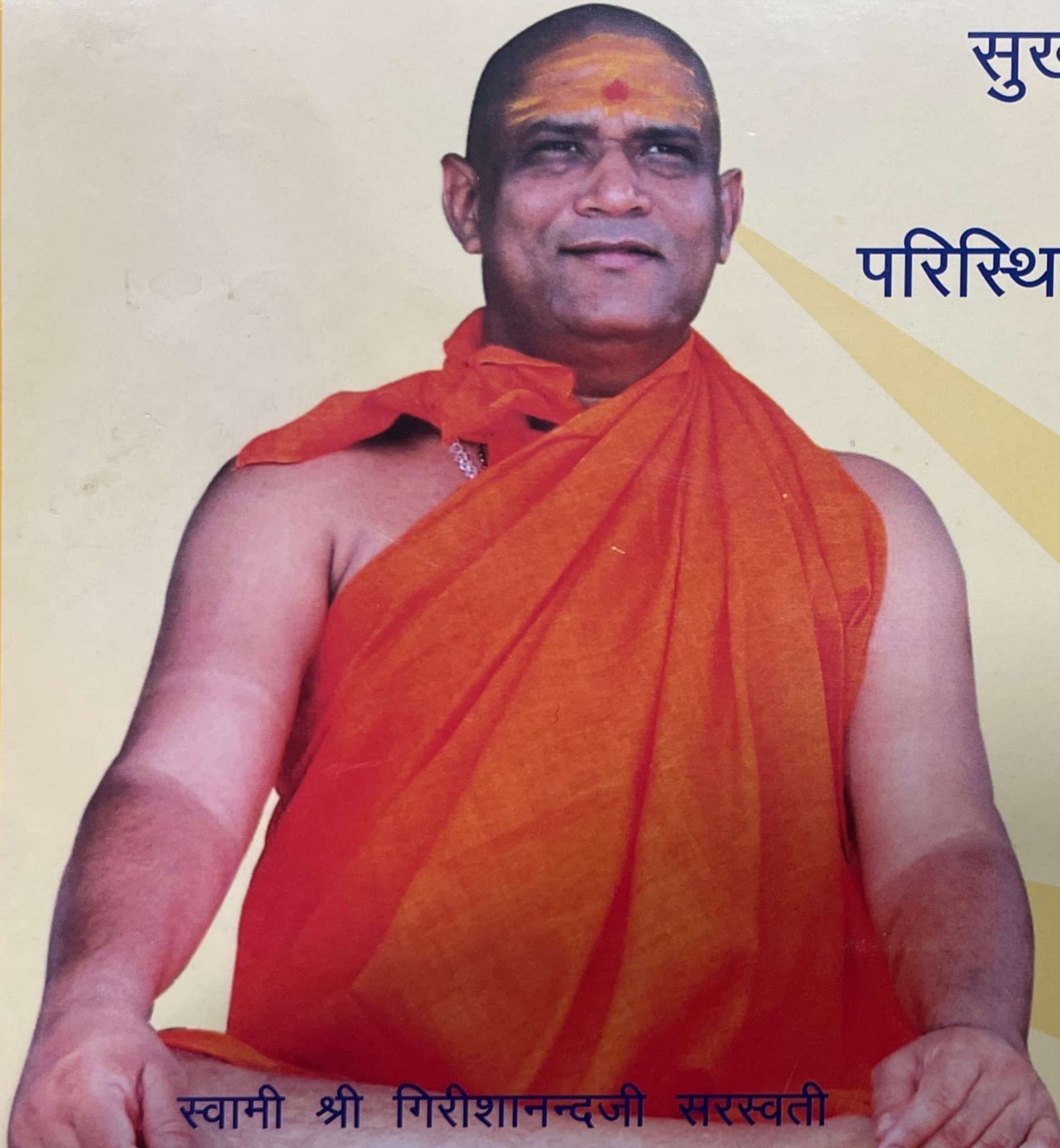

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

13

सृष्टि को नहीं बदलना है,
दृष्टि को बदलना है।
दृष्टि बदल जायेगी
तो
सृष्टि अपने आप ठीक
दिखने लग जायेगी।

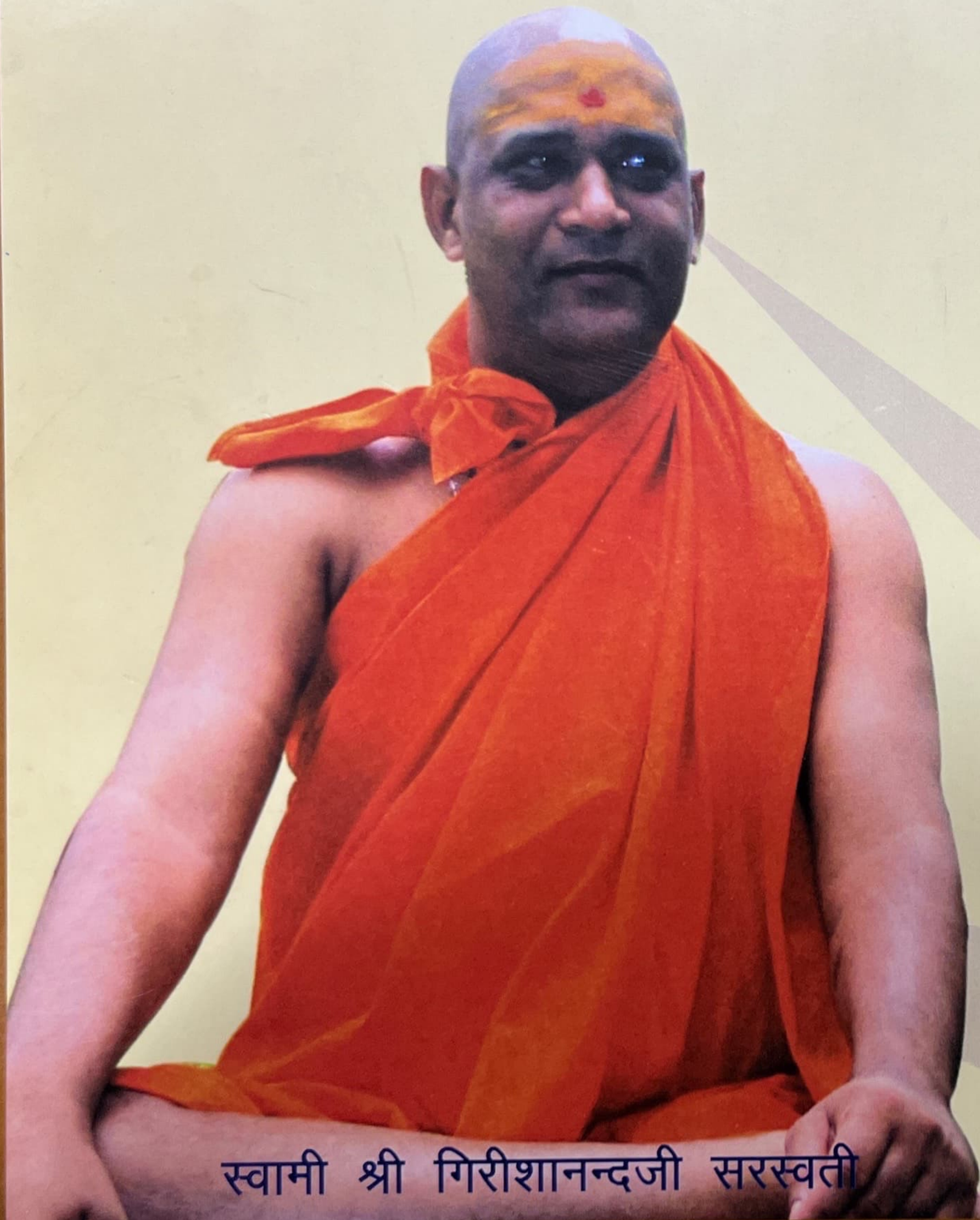

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

14

जहां भी रहो आवश्यक बन के रहो,
भार बनके नहीं ।

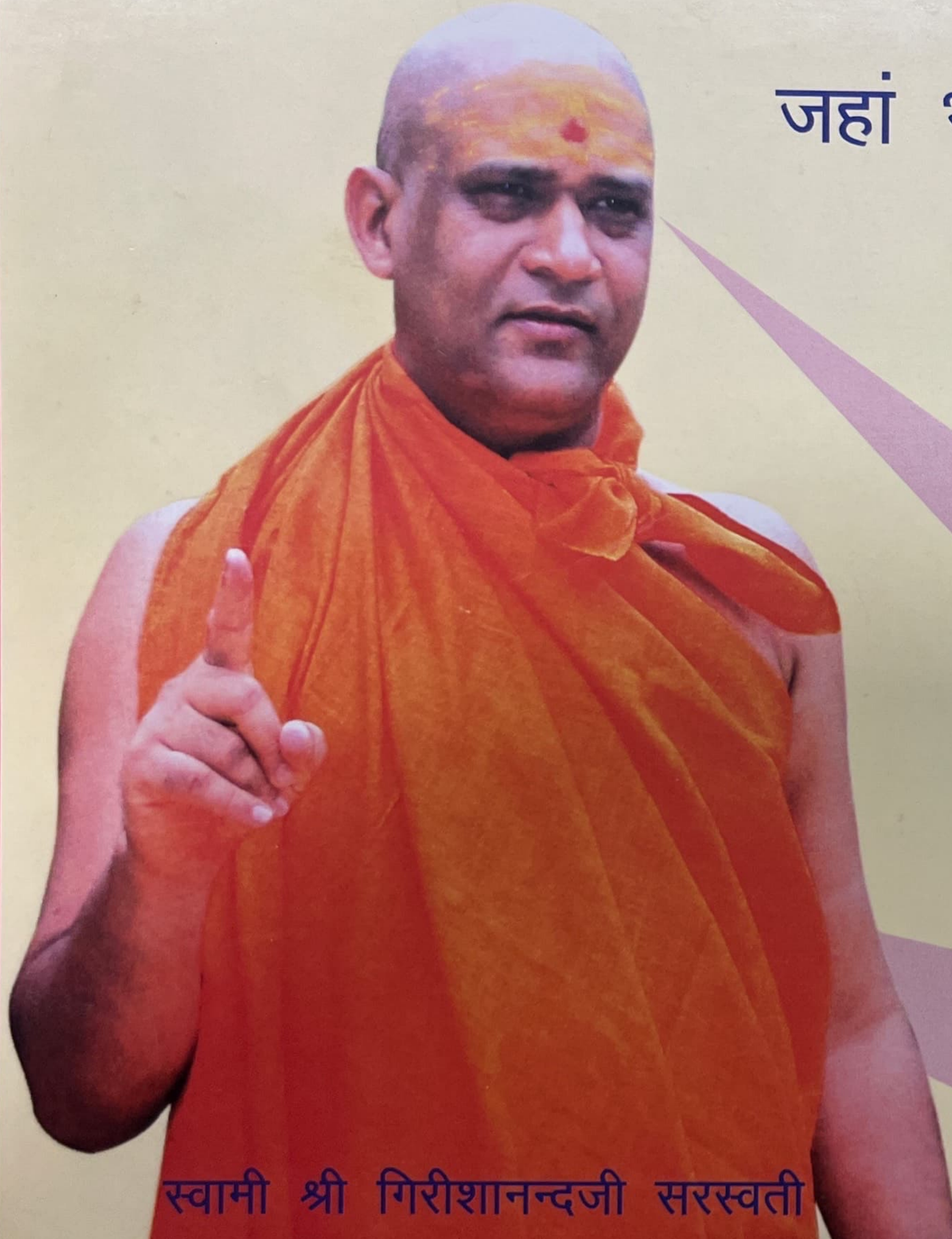

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

15

जो तुम स्वयं दूसरो से चाहते हो
वही दूसरों को देना प्रारम्भ करो ।

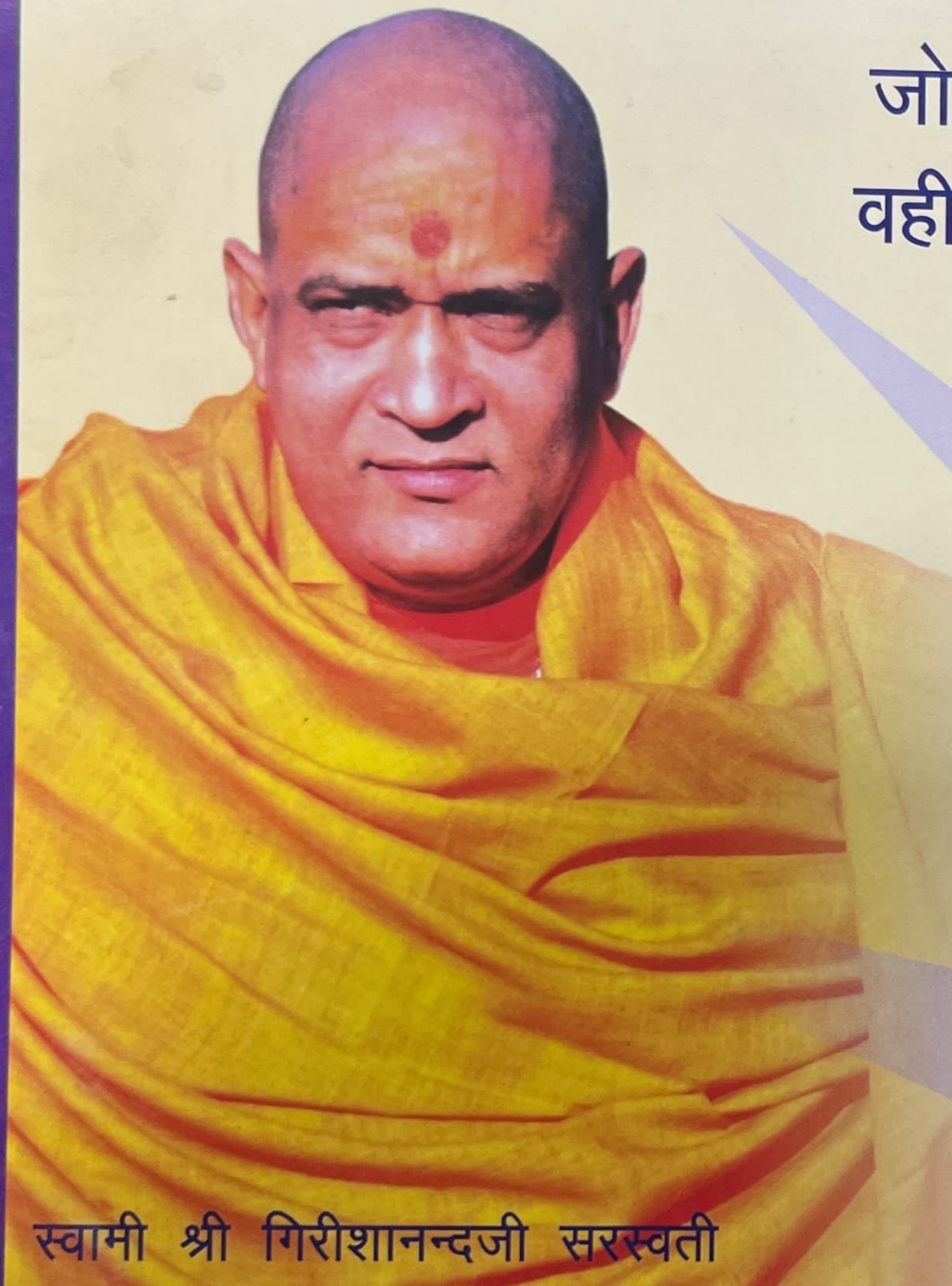

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

16

पूर्ण केवल ईश्वर है ।
संसार में कहीं पूर्णता की
आशा नहीं करनी चाहिये ।

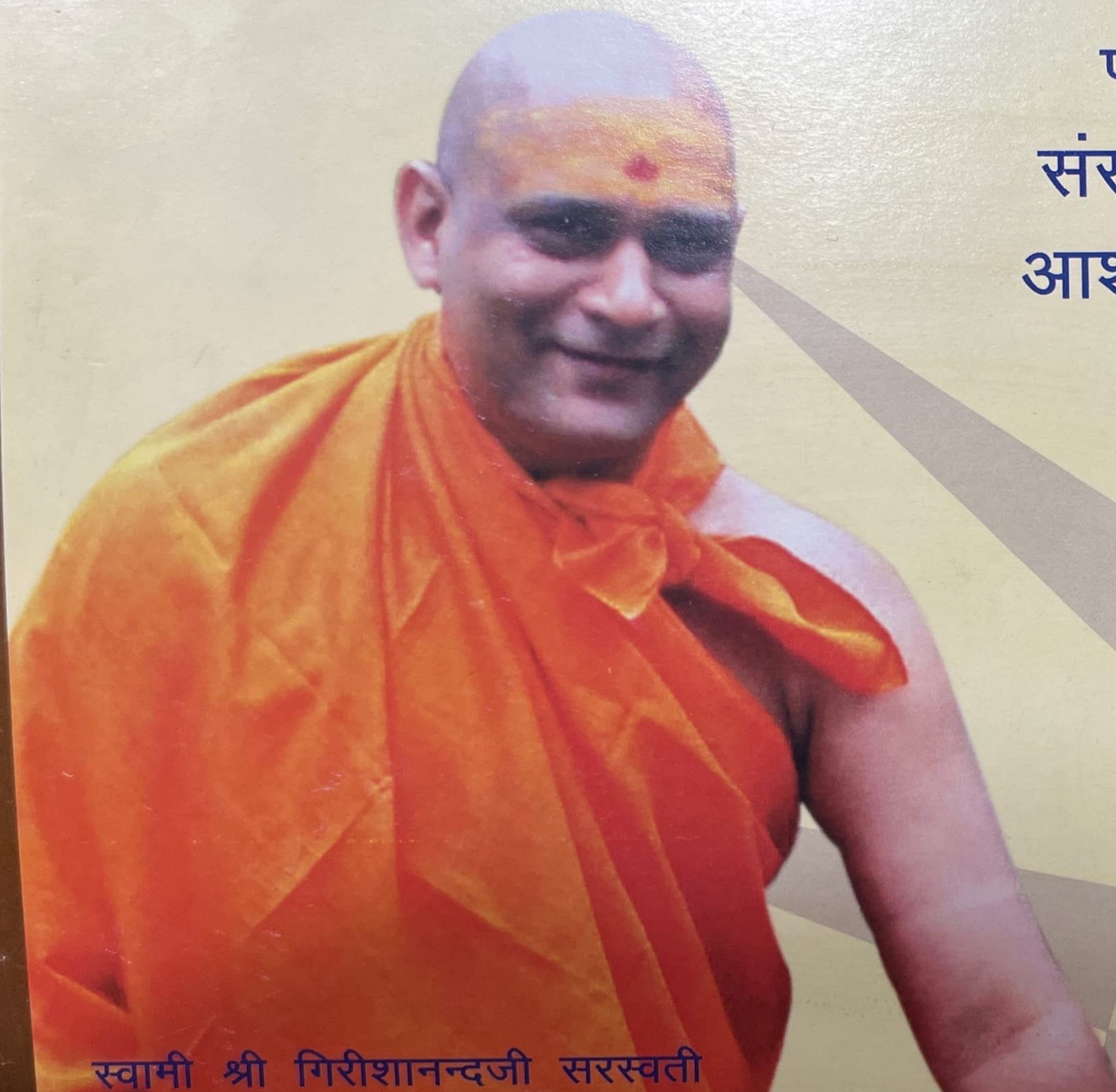

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

17

गम्भीरता से विचार करना है
तो ईश्वर के विषय में करो।
संसार के विषय में सोचने से
दुःख ही मिलेगा।

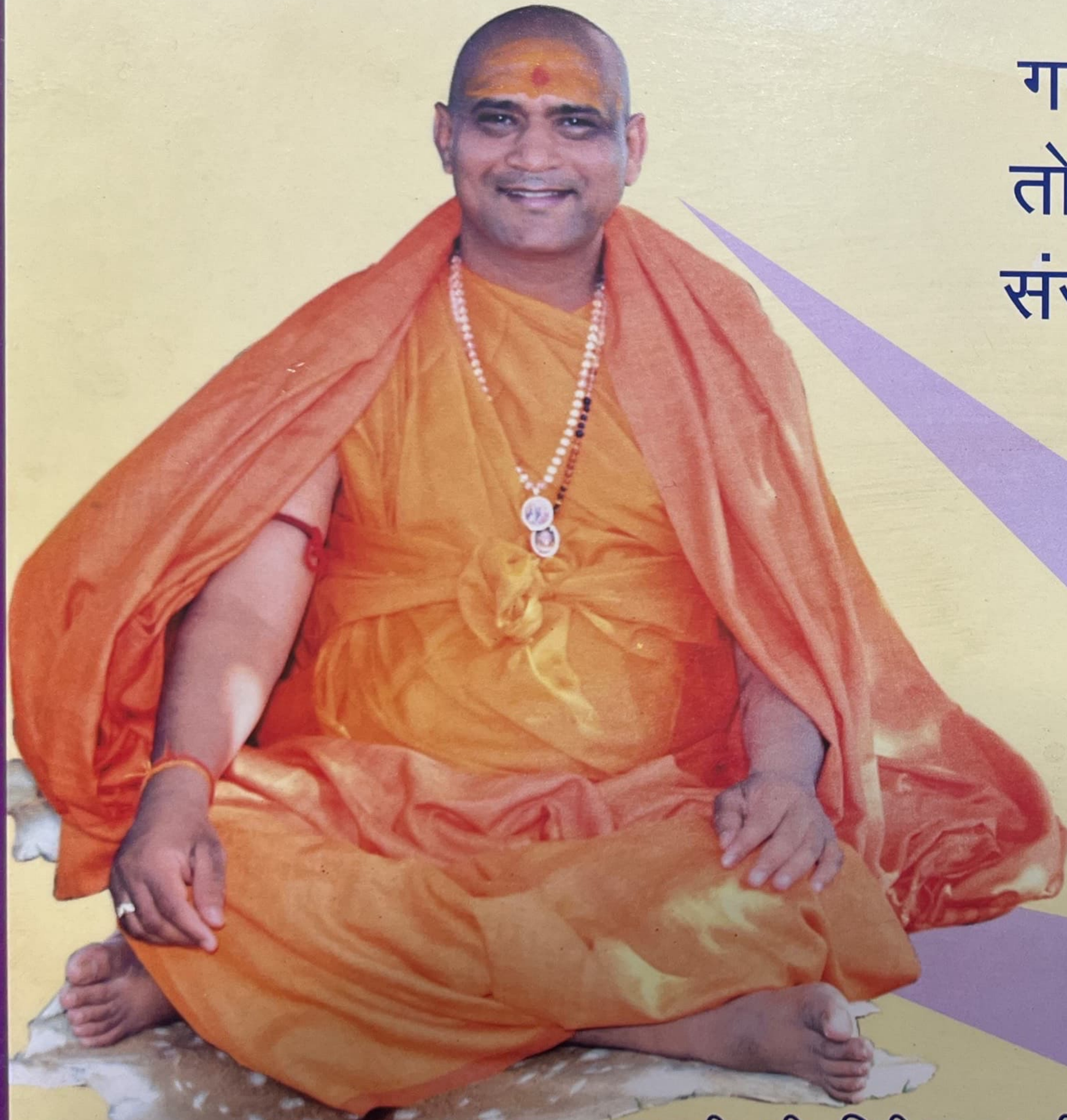

18

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

किसी भी प्रकार ईश्वर से
जुड़े रहना सुख का मूल है।

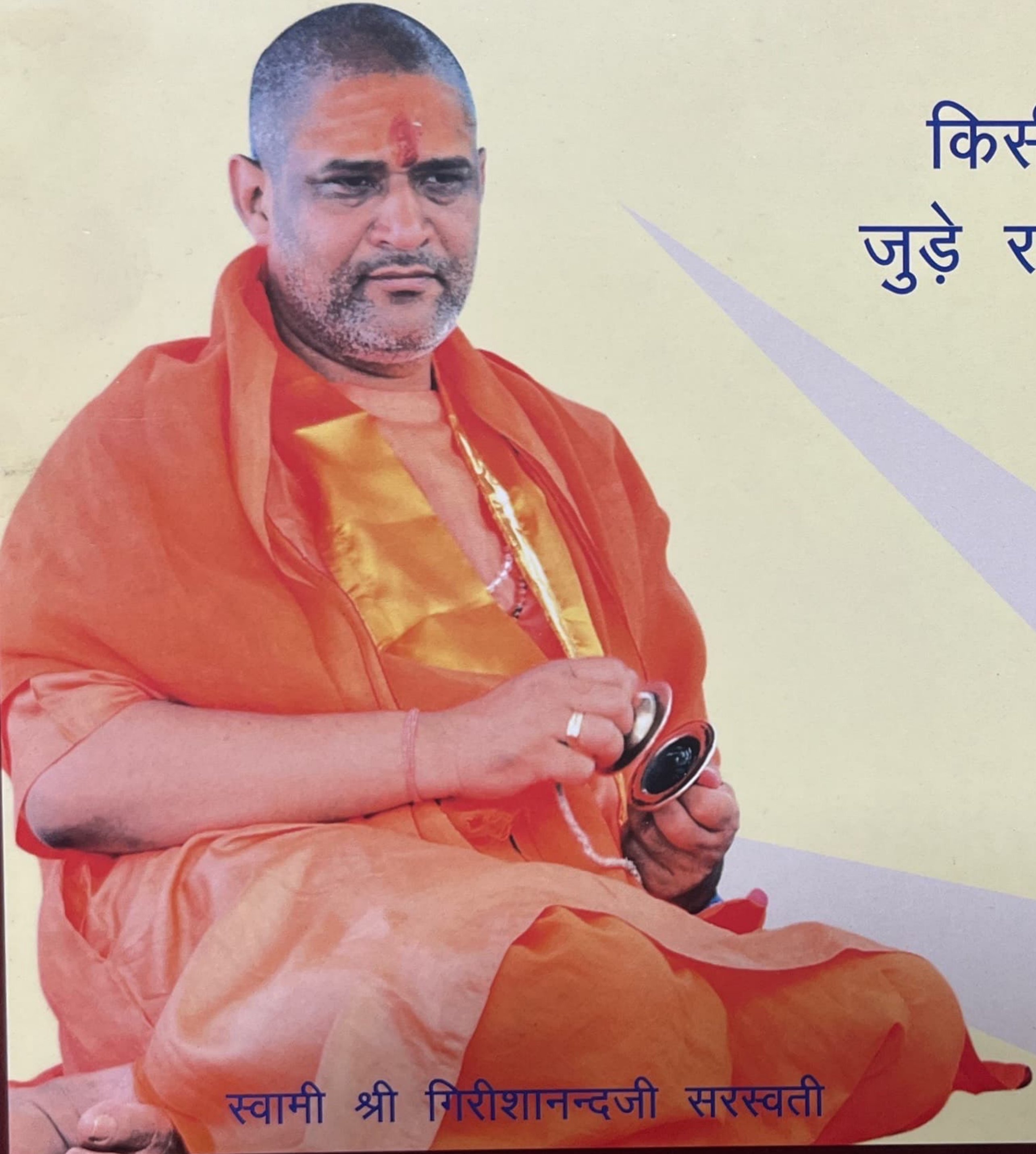

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

19

जीवन में परिवर्तन
भक्ति से ही आयेगा।

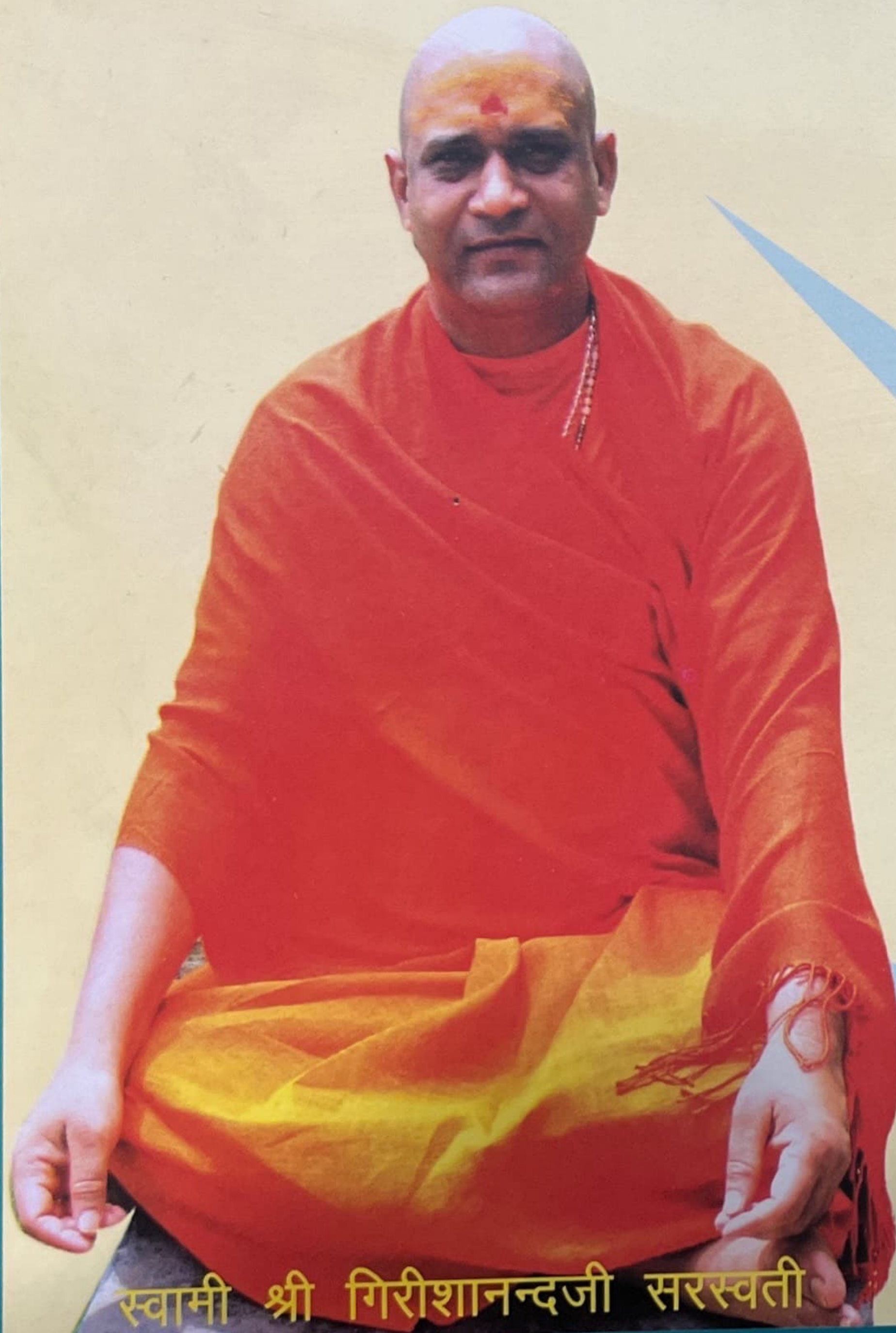

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

20

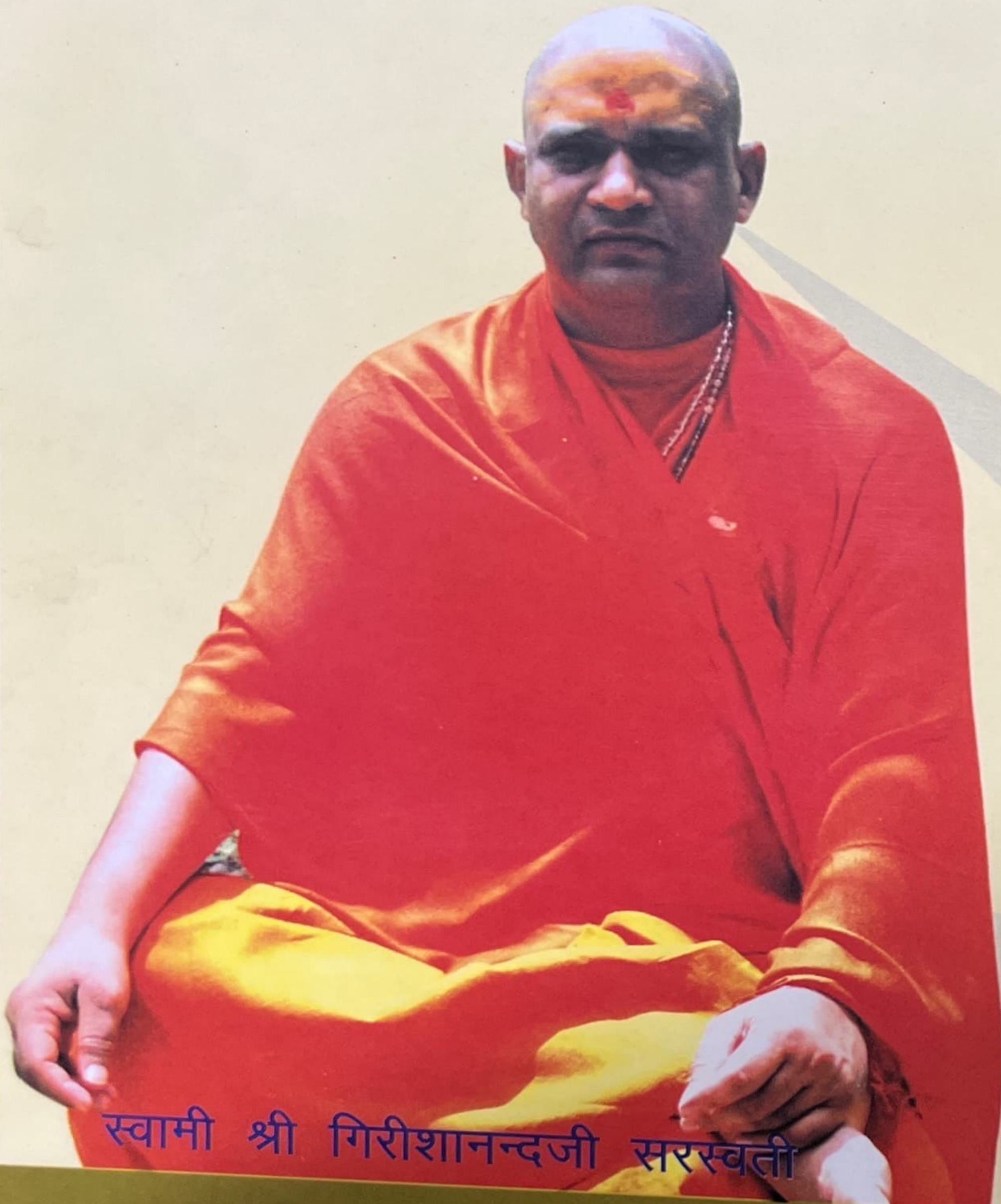

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

कम बोलना चाहिये
और
अधिक सुनना चाहिये ।

21

ईश्वर, गुरु और
अपनी दृष्टि में ठीक रहो,
सम्पूर्ण विश्व को
कोई संतुष्ट नहीं
कर सकता ।

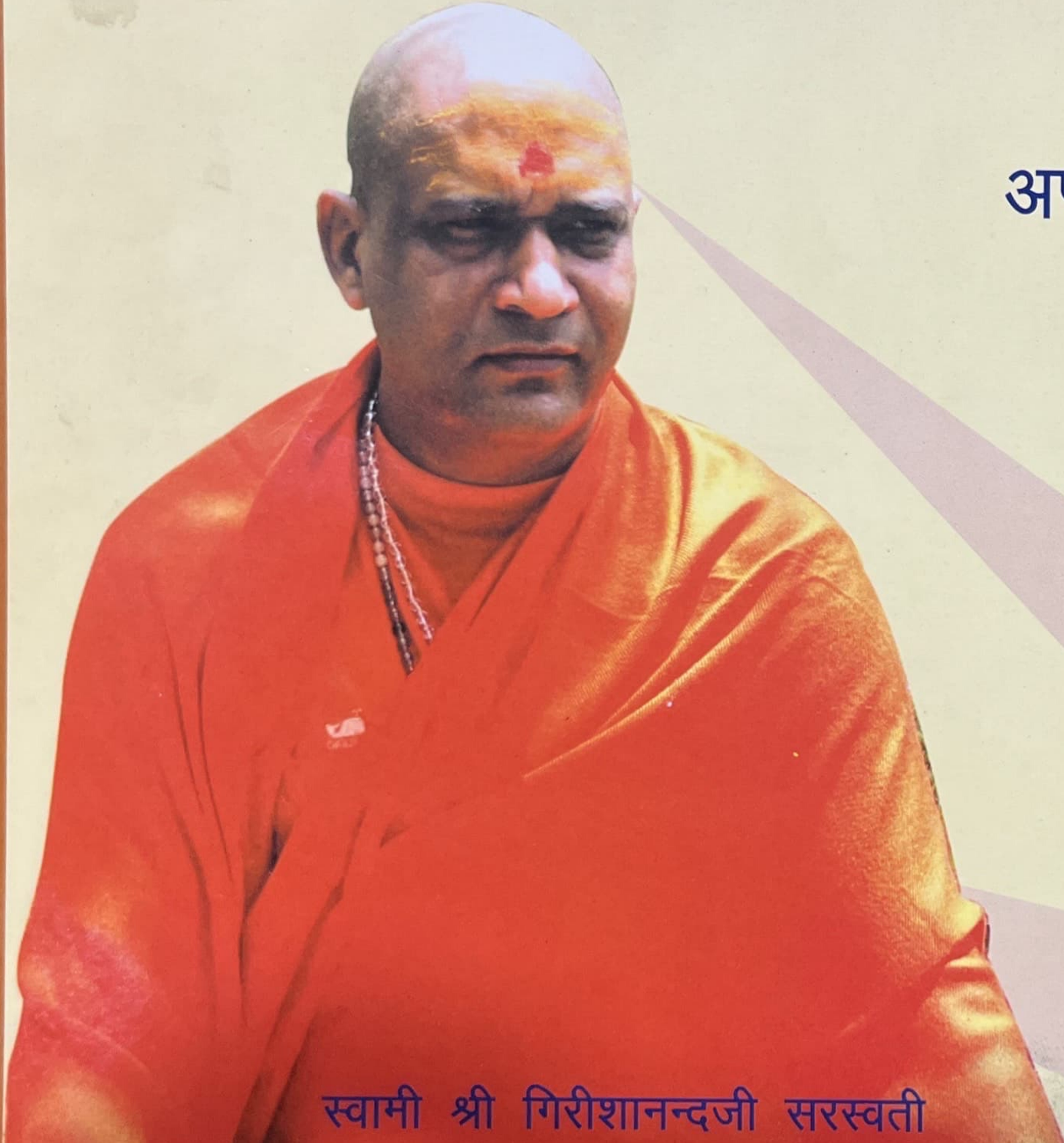

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

राग – द्वेष
किसी से नहीं करना
लेकिन व्यवहार
उसी से करना
जिससे विचार
मिलते हों।

23

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

समय से पहले
और भाग्य से ज्यादा
संसार में किसी को
कुछ नहीं मिलता ।

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

24

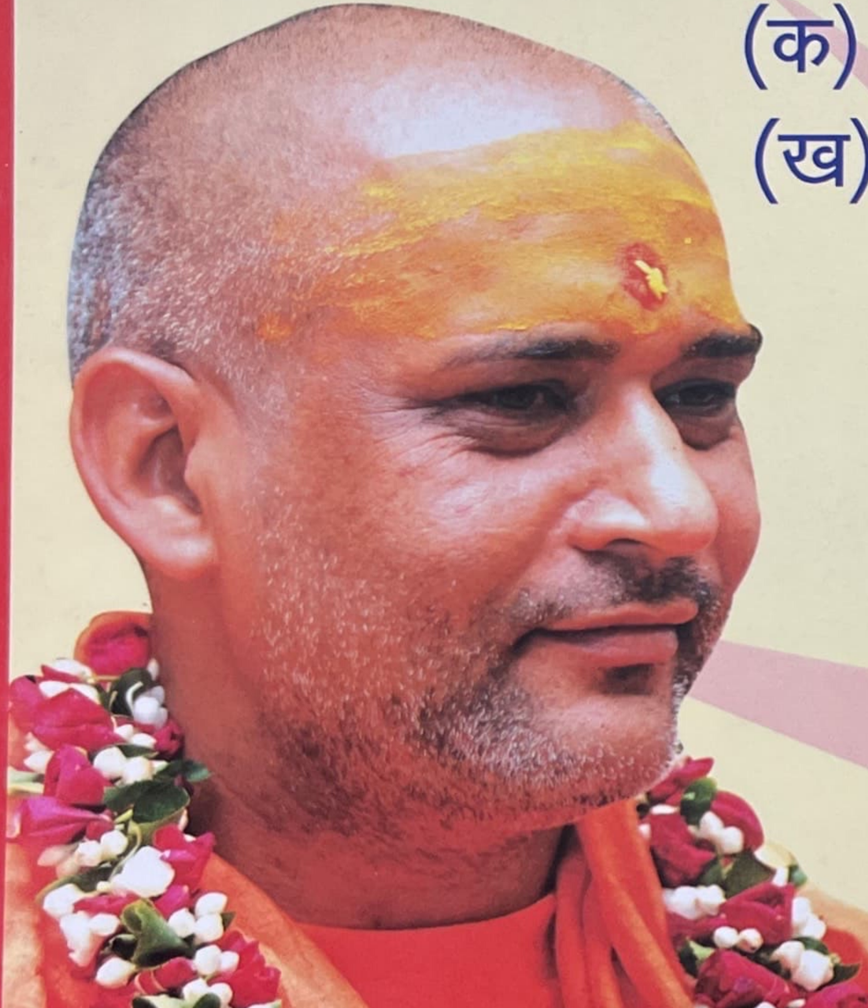

सुखी होने के लिए दो बातें याद रखो
और दो बातें भूल जाओ ।
(क) याद रखो–भगवान और मृत्यु को ।
(ख) भूल जाओ–अपनी की हुई भलाई
एवं
दूसरे की, की हुई बुराई ।

25

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

आशा रखना ही दु:ख का कारण है
और आशा छोड़ देना ही
सुख का कारण है ।

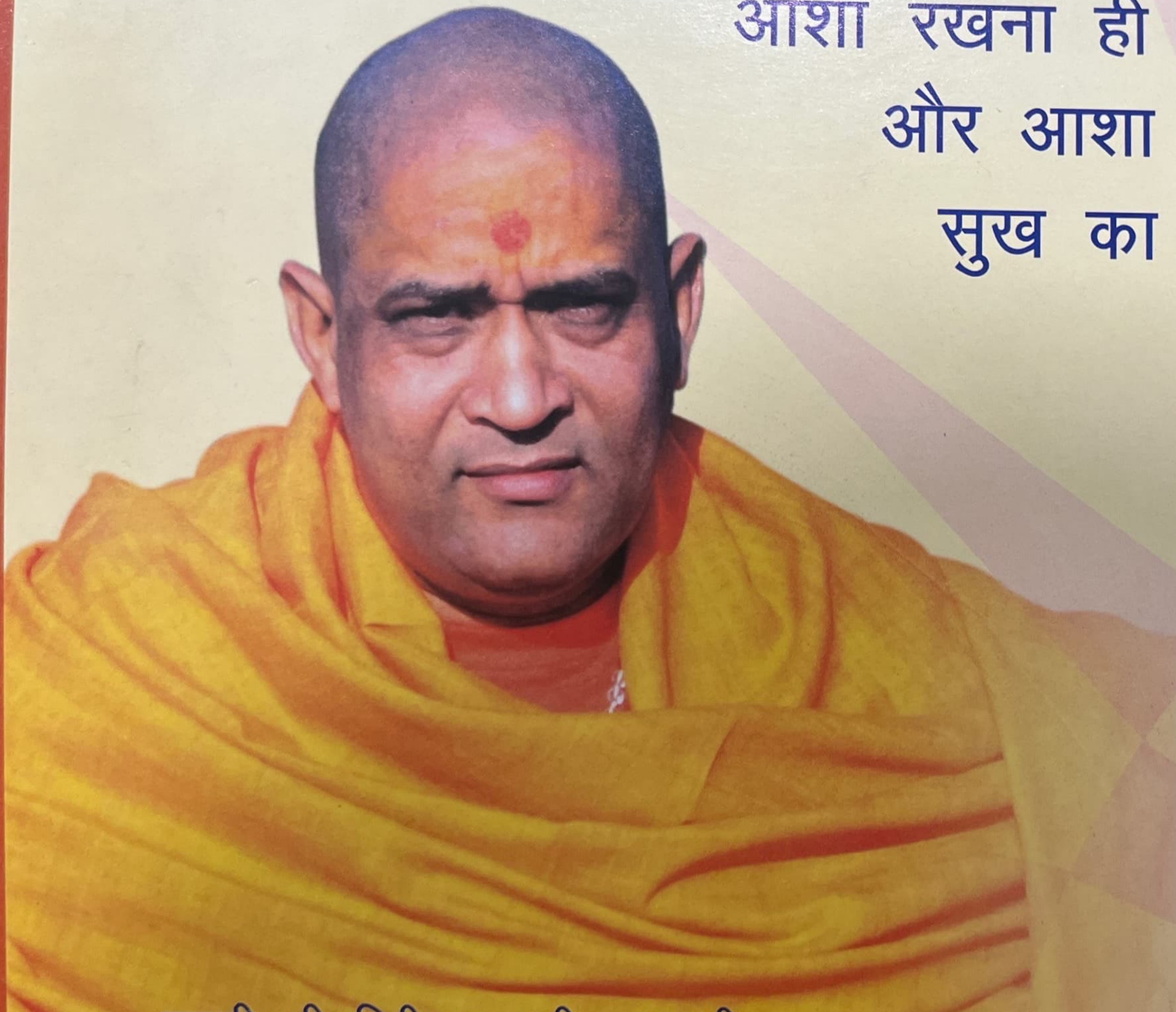

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

26

सबसे अच्छा व्यवहार करो
परन्तु यह मत समझो की
तुम्हारे अच्छे व्यवहार
से सब खुश रहेंगे ।

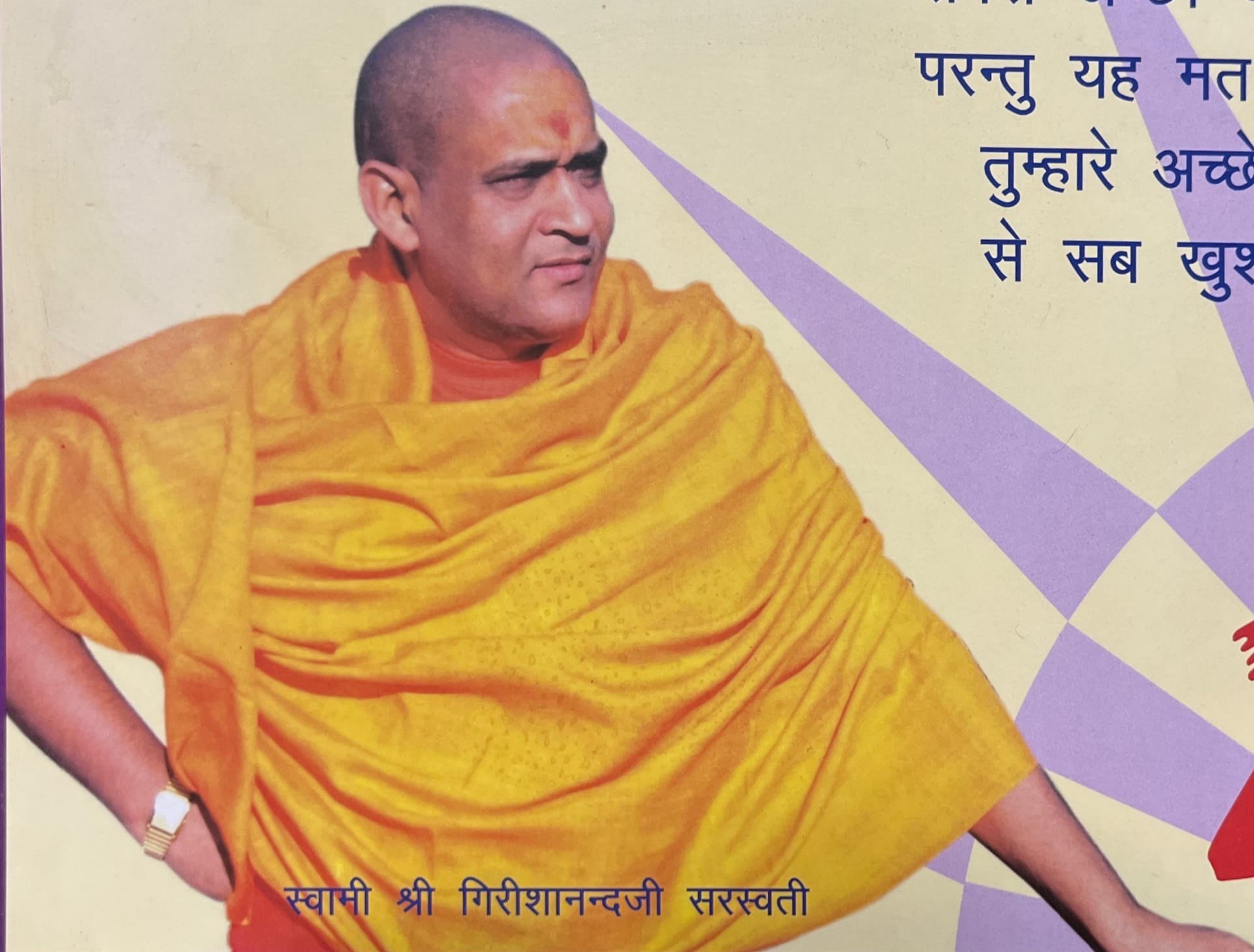

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

27

जितना क्षमा हम अपने को करते हैं
उतना क्षमा यदि सामनेवाले को
करना सीख जायें तो बहुत सारी
समस्यायें हल हो जायेंगी ।

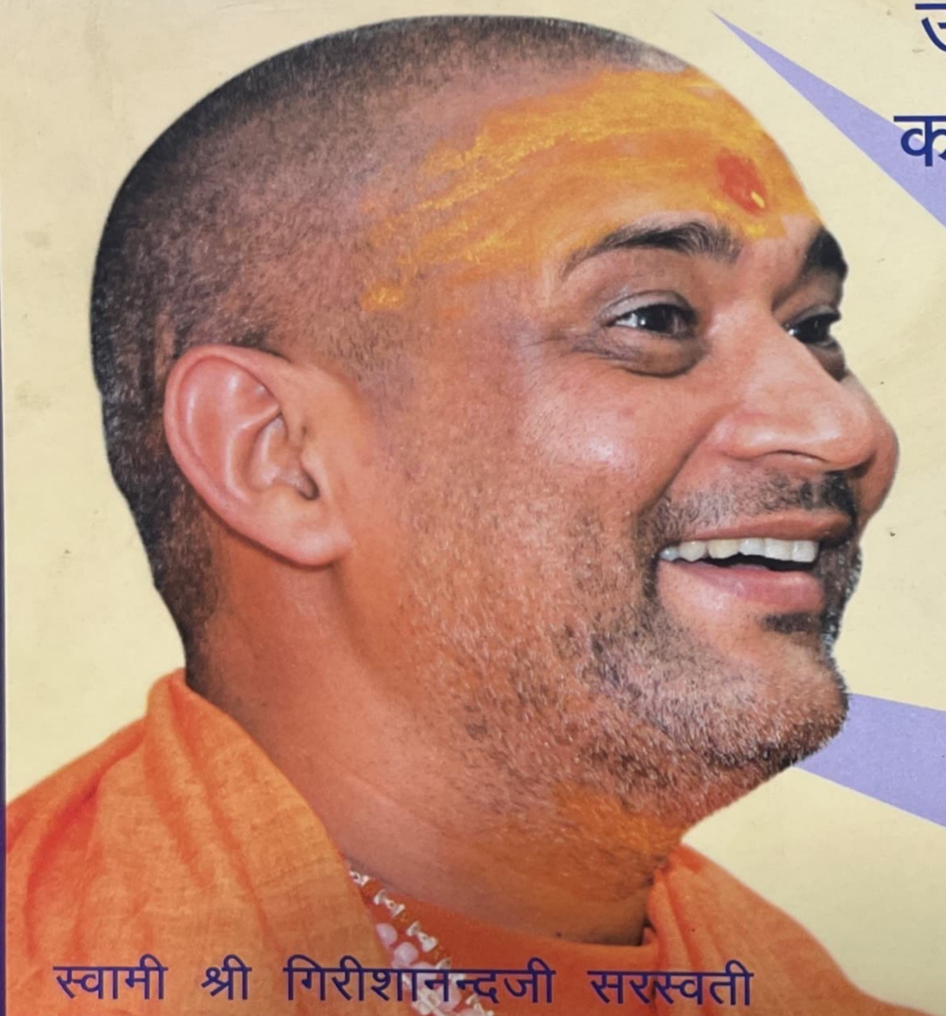

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

28

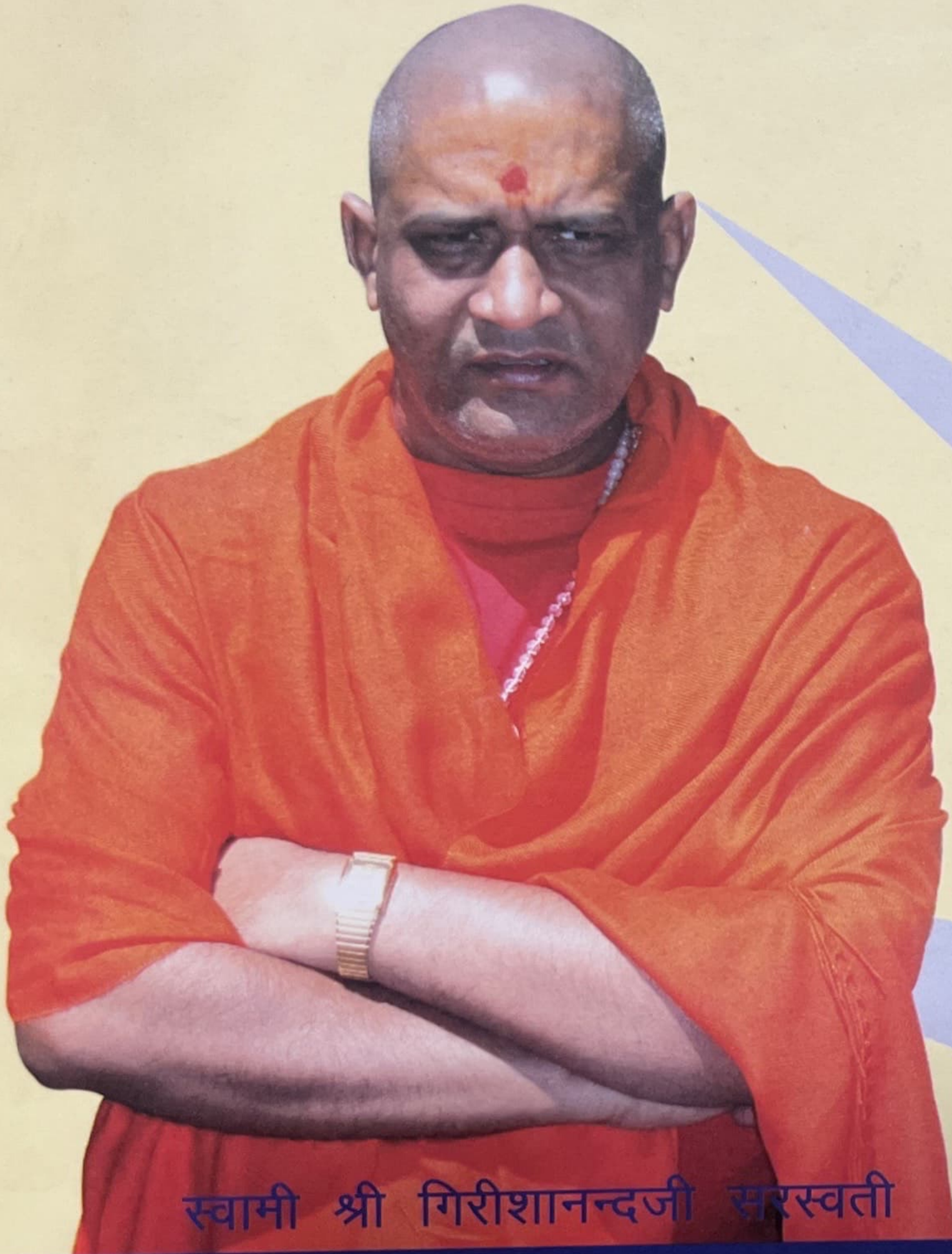

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

दुष्ट सम्बन्ध जोड़ना भी चाहे
तो भी नहीं जोड़ना चाहिए
और
साधु सम्बन्ध तोड़ना भी चाहे
तो भी नहीं तोड़ना चाहिए ।

29

बिना पूछे किसी को
सलाह नहीं देनी चाहिये
और अनुचित प्रश्न का भी उत्तर
नहीं देना चाहिये ।

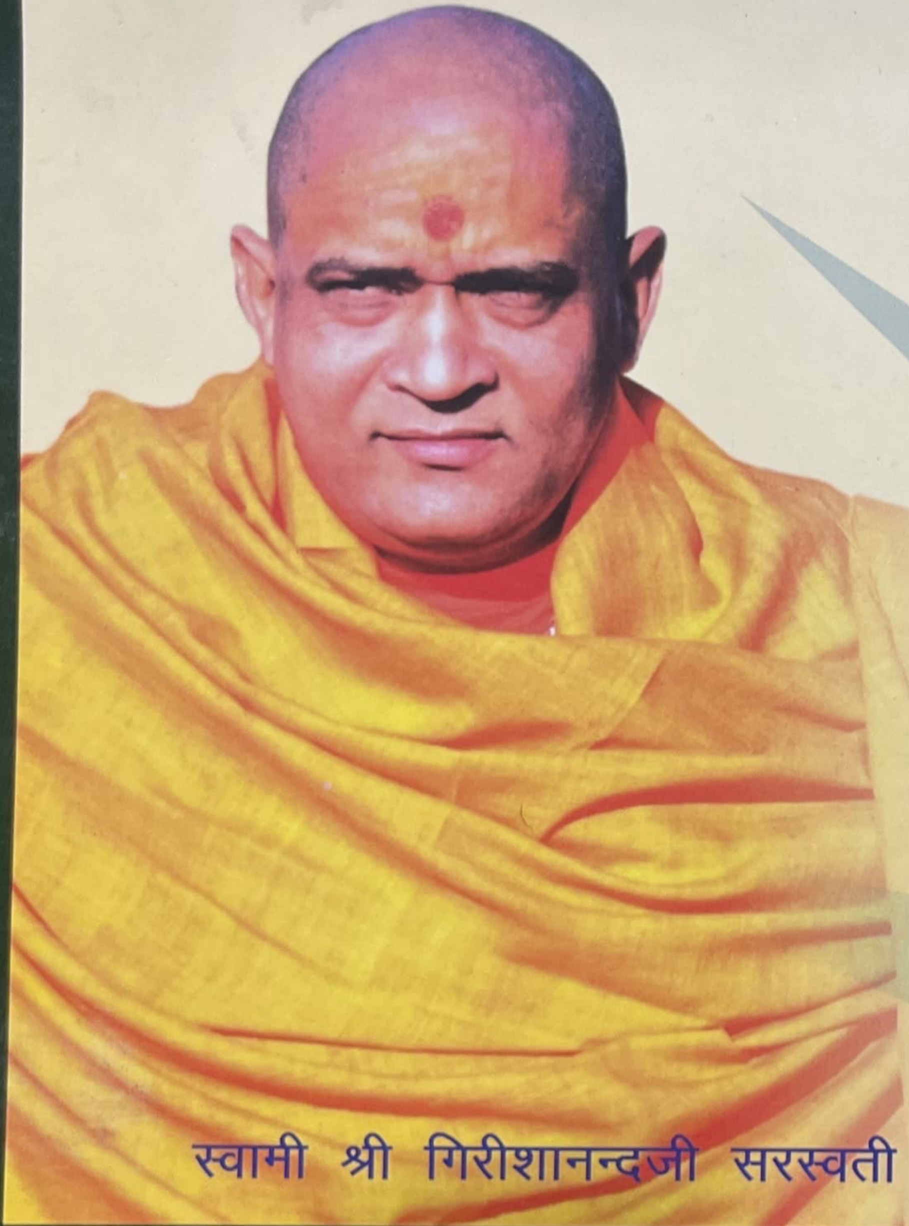

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

30

सम्पत्ति होना दोष नहीं है
लेकिन लक्ष्मी के
साथ–साथ नारायण भी
होनें चाहिए ।

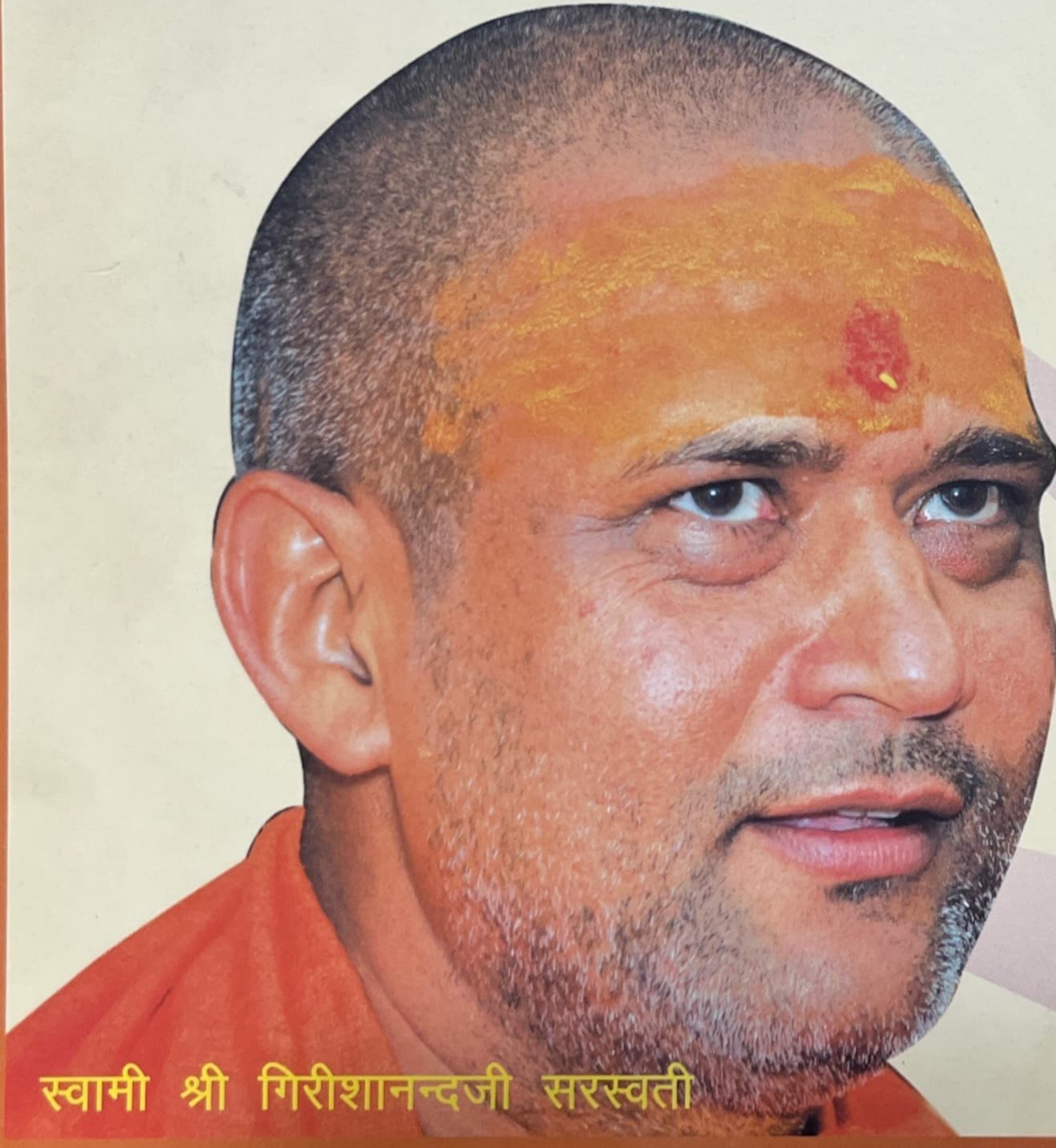

स्वामी श्री गिरीशानन्दजी सरस्वती

31